विद्या भवन बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय।

वर्ग -अष्टम। विषय- हिंदी

शिक्षिका -सरिता कुमारी

दिनांक -07-06 -2020

बच्चों।

ऊपरी दिखावा छोड़कर सच्चे मन से गरीब और असहाय की मदद करना ही यज्ञ अथवा पूजा है।

आज से हम नए पाठ की शुरुआत करेंगे। इस पाठ का मुख्य संदेश यही है।

महायज्ञ का पुरस्कार

इसके लेखक श्री यशपाल जैन हैं। कहानी पढ़ने के पूर्व लेखक से परिचित होते हैं।

लेखक परिचय-

यशपाल जैन का जन्म 1 सितंबर 1912 को विजयगढ़ जिला अलीगढ़ में हुआ था। इन्होंने सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन के मंत्री के रूप में हिंदी की सेवा की।इन्होंने अनेक उपन्यास, कहानी संग्रह, एक आत्मकथा ,तीन प्रकाशित नाटक, कविता संग्रह, यात्रा वृतांत संग्रह का प्रकाशन व संपादन किया ।इनकी रचनाओं में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को गंभीरता से उभारा गया है।

यशपाल की भाषा अत्यंत व्यवहारिक है जिसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

1990 में पद्मश्री सम्मान से विभूषित किया गया था।

10 अक्टूबर 2000 को (नागदा) मध्य प्रदेश में इनका निधन हो गया।

महायज्ञ का पुरस्कार यशपाल जी द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध कहानी है। इसमें उन्होंने एक काल्पनिक कथा का आश्रय लेकर परोपकार की शिक्षा पाठकों को दी है।

आइए! महायज्ञ का पुरस्कार कहानी की शीर्षक की सार्थकता को जाने।

महायज्ञ का पुरस्कार कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक एवं उचित है।

कहानीकार यशपाल जी ने कहानी में यह दिखाया है कि निस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा कर महायज्ञ होता है। इस कहानी के मुख्य पात्र सेठ एवं सेठानी हैं।इन्होंने अपनी गरीबी को दूर करने के लिए यज्ञ के फल को बेचने के लिए विवश होना पड़ा। अपने यज्ञ के फल को बेचने के लिए सेठ जी कुंदनपुर गए लेकिन रास्ते में भूखे कुत्ते को रोटी खिला कर उससे अपने यज्ञ कमाया था। उसे वह बेचने के लिए तैयार नहीं हुआ ।सेठ जी की दृष्टि में यह उसका कर्तव्य था कोई यज्ञ नहीं।वापस आ जाने पर रात को दिया जलाने पर उन्हें कारखाने में

धन का अंबार दिखाई दिया और साथ ही एक दिव्य वाणी भी सुनाई देती है कि उनके द्वारा भूखे कमजोर कुत्ते पर किए गए उपकार का यह पुरस्कार है अतः निस्वार्थ भाव से कर्म करना चाहिए और लोगों की भलाई कर्तव्य मानकर करना चाहिए यही महायज्ञ है अतः कहा जा सकता है कि कहानी का शीर्षक उचित एवं सार्थक है।

बच्चों अब अगले दिन कहानी से आप परिचित होंगे।तब तक आप दिए गए अध्ययन सामग्री को ध्यान पूर्वक पढ़ कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

तब तक के लिए स्वस्थ रहें एवं सुरक्षित रहें।

धन्यवाद।